

मेरा कॉलम

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
मो. नं. 73 8657 8657

वृद्धाश्रम

उस पॉश वृद्धाश्रम के स्वागत कक्ष की मटमैली दीवार पर टंगे ताखे पर रखी वह पीली पड़ चुकी पुरानी चिट्ठी पिछले बीस सालों से इस बात का जीता जागता सबूत थी कि रिश्तों की कीमत अब सिर्फ एप्रूवल पेंडिंग फाइलों की तरह धूल फांकने के लिए रह गई है। उस खत के मुड़े हुए कोने पर वक्त की इतनी परतें जम चुकी थीं कि अब उस पर उंगलियों के निशान ढूंढने से ज्यादा आसान किसी कॉरपोरेट दफ्तर में ईमानदार संवेदना ढूंढना लगता था। उस कागज के टुकड़ा बन चुके अतीत को देखकर ऐसा लगता था मानो वह किसी बहरी दुनिया से यह पूछ रहा हो कि भाईसाहब जब तुम्हारे अपने घर के बुजुर्ग तुम्हारे एसी कमरों के रास्ते में रोड़ा बनने लगे थे, तब तुमने चैरिटी और एनजीओ के नाम पर कौन सा वाला फाइव स्टार ड्रामा रचा था। उस पर सूखे फूलों की एक ऐसी माला टंगी थी जैसे कोई मरा हुआ सिस्टम खुद अपनी ही अर्थी पर श्रद्धांजलि के दो फूल चढ़ाकर अपनी जिम्मेदारियों से पल्ला झाड़ रहा हो। उस कक्ष के बाहर हर सुबह सात बजते ही वृद्ध रामप्रसाद अपनी लाठी के सहारे ऐसे टिककर बैठ जाते थे जैसे वे इस आधुनिक समाज के लोकतंत्र के आखिरी चौकीदार हों जिन्हें खुद उनके ही खून ने नौकरी से निकाल दिया हो।

खद्दर का मैला कुर्ता पहने रामप्रसाद दिन भर उस चिट्ठी को ऐसे निहारते रहते थे जैसे कोई प्रेमी बरसों पहले बिछड़ी हुई अपनी उस महबूबा का इंतजार कर रहा हो जो किसी मल्टीनेशनल कंपनी में वाइस प्रेसिडेंट बनकर इसे हमेशा के लिए भूल चुकी है। तभी राजधानी से नए-नवेले निदेशक बनकर आए साहब विकास मल्होत्रा अपनी चमचमाती गाड़ी से उतरते हैं और उनका पहला टारगेट यह तय होता है कि इस फटेहाल बुजुर्ग को यहाँ से खदेड़ दिया जाए क्योंकि एक लाचार बाप का अपनी औलाद की बेईमानी के सामने इस तरह ताखे को निहारना उनकी कॉरपोरेट और सेटल्ड ऑफिस की फितरत के बिल्कुल खिलाफ था। विकास ने अपने सूट के कॉलर को ठीक करते हुए पूरे रौब में पूछा कि ताऊ आप इस उम्र में रोज यहाँ आकर हवा क्यों खराब कर रहे हैं, अगर पेंशन चाहिए तो अंदर जाकर फॉर्म भरिए, इस तरह बाहर बैठकर एक कागज के टुकड़े को घूरने से देश की जीडीपी या बुजुर्गों के प्रीमियम ओल्ड एज होम्स की बुकिंग में एक इंच का भी फर्क नहीं पड़ने वाला है। रामप्रसाद ने अपनी कांपती हुई उंगलियों से हाथ जोड़े और भारी गले से बोले कि साहब मैं भीख का कटोरा लेकर नहीं बैठा हूँ, मैं तो बस उस दिन का इंतजार कर रहा हूँ जब इस चिट्ठी में से वह बेटा दोबारा बाहर निकलेगा जिसे इस देश के ठेकेदारों ने बहुत पहले ही कमर्शियल पैकेज में बदल दिया है।

विकास को उनका यह डायलॉग किसी घटिया फिलॉसफी की किताब की तरह लगा और उन्होंने माथे पर बल डालते हुए कहा कि ताऊ आप किस पुराने जमाने के इमोशनल ड्रामे में अटके हुए हैं, आज सरकार मेक इन इंडिया के तहत स्मार्ट सिटीज बना रही है, फिर इस कागज के टुकड़े से आपको कौन सा खोया हुआ कल सुनाई दे रहा है। तभी वहाँ चाय की चुस्की लेते हुए सेवानिवृत्त प्रबंधक पंडित विश्वनाथ अपनी तोंद को संभालते हुए आगे आए और बोले कि साहब रामप्रसाद की इस बेबसी को पागलपन समझने की भूल मत कीजिए, क्योंकि जिस बेटे को आप सब लोग टीवी पर बैठकर देश का सबसे बड़ा सोशल आंत्रप्रेन्योर और युवाओं का प्रेरणास्त्रोत मानते हैं, उसी सुमित ने कभी इसी आश्रम में खड़े होकर इसी चिट्ठी की कसम खाई थी कि वह कभी माँ बाप के आंसुओं और उनकी मजबूरियों की दलाली नहीं होने देगा। विकास के भीतर का फाइल वाला कीड़ा तुरंत जाग गया और वे सीधे अभिलेखागार के धूल फांकते रजिस्टर में घुस गए, जहाँ के कागजों को पलटते ही उनके पैरों तले की जमीन ऐसे खिसकी जैसे किसी ने शेयर बाजार में अचानक लोअर सर्किट मार दिया हो।

फाइलों के पन्नों से जो सच बाहर आया उसने बता दिया कि जब सुमित ने बुजुर्गों के अधिकारों के लिए कैंडल मार्च निकाला था, तब दुनिया की सबसे बड़ी चेन वाले ओल्ड एज होम्स की ग्लोबल लॉबी ने उसे दो सेकंड के भीतर खरीदने का ऐसा तगड़ा पैकेज ऑफर दिया कि वह देखते ही देखते देश का सबसे बड़ा अरबपति टाइकून बन बैठा जो आज खुद बुजुर्गों को कमरे में कैद करके उनसे लाखों रुपये महीने का किराया वसूल रहा है। विकास बाहर आए और रामप्रसाद के कंधे पर हाथ रखकर कांपती आवाज में बोले कि ताऊ आपका बेटा सुमित तो खुद इस देश के लाचार माँ बाप की मजबूरी का सबसे बड़ा दलाल और अरबपति सौदागर बन चुका है, फिर आप यहाँ बैठकर किस भगवान की तलाश कर रहे हैं। यह सुनते ही रामप्रसाद फूट-फूटकर रो पड़े और बोले कि साहब मुझे अच्छी तरह पता है कि मेरा खून किस बाजार में बिका हुआ है, मैं तो बस रोज यहाँ इसलिए आता हूँ ताकि यह देख सकूँ कि जो लोग मंच पर खड़े होकर बुजुर्ग सम्मान की लंबी लंबी बातें करते हैं, वे जब अपने ही बाप के बेचे हुए जमीर की इस सड़ी हुई बदबू को महसूस करते हैं, तो क्या उनके वातानुकूलित कमरों में भी कभी शर्म की हल्की सी हवा चलती है या नहीं।

विकास इस बात को सुनकर ऐसे सन्न रह गए जैसे उनके सारे एसी फेल हो गए हों और वह पूरा आलीशान आश्रम एक ऐसे कब्रिस्तान में बदल गया जहाँ न तो कोई दलील बची थी और न ही किसी के पास अपनी इस बेशर्मी पर पर्दा डालने के लिए कोई ढंग का बहाना बचा था। बाहर खड़े सरकारी होर्डिंग्स पर वरिष्ठ नागरिक कल्याण योजना का भव्य विज्ञापन चमक रहा था और भीतर वो पुरानी चिट्ठी इस बात पर खामोशी से मुसकुरा रही थी कि तुम चाहे जितने आधुनिक वृद्धाश्रम बना लो, लेकिन जब तक देश के भीतर अपनों को बेचने वाले सुमित पैदा होते रहेंगे, तब तक हर बाप की पीठ पर लगा यह लाचारी का टैग ऐसे ही नीलाम होता रहेगा। रामप्रसाद ने अपनी लाठी उठाई और बिना एक भी शब्द बोले धीरे से आगे बढ़ गए क्योंकि वे जानते थे कि इस देश में रिश्तों को सुधारने के लिए किसी नए बजट की जरूरत नहीं है, बल्कि उस आदमी की जरूरत है जो बिकने से पहले कम से कम अपनी कोख और परवरिश का सौदा बाजार में न करे। अब पूरा कस्बा इस गहरी नींद में सो रहा था जहाँ हर नेता और हर अफसर अपनी अगली डील की प्लानिंग कर रहा था और वो पीला पड़ चुका खत सिर्फ इस बात का इंतजार कर रहा था कि कब कोई नया सुमित पैदा हो जो इस देश के सारे रिश्तों को ही कबाड़ के भाव में बेचकर हमेशा के लिए अमर हो जाए।

तीन दिवसीय मप्र मराठी साहित्य संमेलन व दीपावली अंक प्रदर्शनी 13 से

इन्दौर (ई) स्थानीय प्रीतम लाल दुआ सभागृह में आगामी 13 नवंबर से तीन दिवसीय मप्र मराठी साहित्य संमेलन व दीपावली अंक प्रदर्शनी का आयोजन मुक्त संवाद साहित्यिक समिति द्वारा आयोजित किया जा रहा है। 15 नवंबर तक आयोजित इस आयोजन के बारे में जानकारी देते संस्था मुक्त संवाद के अध्यक्ष मोहन रेडगावकर व सचिव निलेश हिरपाठक ने बताया कि समारोह में विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रम किए जाएंगे। 13 नवंबर सुबह 11 बजे दिवाली अंक व मराठी पुस्तक प्रदर्शनी लगेगी। 14 नवंबर को परिसंवाद होगा, जिसमें डॉ. अस्मिता हवालदार, प्राजक्ता दातार, गुरुग्राम दिशा वडनेरकर मुख्य वक्ता के रूप में सम्मिलित होंगे।

सुबह हुआ गोवर्धन पूजन, शाम को भगवान टीकमजी का मोगरे के फूलों से सजा दरबार, लगा छप्पन भोग

श्रीराम मंदिर पंचकुइया में मना अन्नकूट महोत्सव

108 दीपों से की महाआरती, 406 साल पुरानी परंपरा का हुआ निर्वहन, भक्तों को जल बचाने का दिलाया संकल्प

इंदौर। पंचकुइया स्थित श्रीराम मंदिर आश्रम में दीपावली के पावन पर्व पर आयोजित अन्नकूट महोत्सव साधु-संतों के सान्निध्य में मना। 406 वर्षों से चली आ रही प्राचीन परंपराओं का निर्वहन हुआ। शाम को भगवान टीकमजी के दर्शन द्वारकाधीश के स्वरूप में हुए। सैकड़ों दीपों से परिसर जगमग हुआ। 108 दीपो से महाआरती हुई।



पीठाधीश्वर पंचकुइया महामंडलेश्वर रामगोपालदास महाराज ने बताया कि मंदिर मे सुबह गोवर्धन पूजन हुआ, 400 से अधिक गौमाताओं का पूजन अर्चन किया। शाम को अन्नकूट महोत्सव की शुरुआत शाम 7 बजे से हुई। भगवान टीकमजी महाराज का विशेष श्रृंगार कर द्वारकाधीश के स्वरूप में दरबार सजा। साथ ही भगवान का फूल बंगला मोगरे, गुलाब सहित अन्य किस्मों के फूलो लो से सजा। विभिन्न प्रकार के पकवानों से निर्मित छप्पन भोग भी लगा। 108 दीपों से महाआरती की गई। भगवान टीकमजी ने द्वारका धाम के स्वरूप में दर्शन दिए। अन्नकूट महोत्सव में भगवान को नए अनाज से बने 56 प्रकार के पकवानों का भोग लगाया गया। इसी को अन्नकूट कहते हैं। वहीं 36 प्रकार की सब्जियों का मिश्रण कर रामभाजी सब्जी बनी। भक्तों को जल बचाने का संकल्प दिलाया।

महोत्सव में मंदिर के ब्रह्मलीन महामंडलेश्वर लक्ष्मणदासजी महाराज को फूल बंगले में विराजित किया। सभी संतों और भक्तों ने उनका स्मरण किया। संत श्री दादा दरबार धूनी वाले महंत जानकी बल्लभ दास महाराज अनिरुद्ध दास महाराज सहित अन्य मौजूद थे।

इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, विधायक रमेश मेंदोला,नारायण अग्रवाल,विष्णु बिंदल, हरिनारायण गोयल, टीकमचंद गर्ग, गोपाल मित्तल, दिनेश अग्रवाल,योगेंद्र महंत,पूर्व विधायक आकाश विजयवर्गीय, पवन सिंघानिया,जगदीश गोयल, महेश दलोतरा,अशोक बीदासरिया, राधेश्याम शर्मा, सुभाष गोयल, संध्या यादव,अखिलेश विश्वकर्मा,विकास अग्रवाल,गुड्डा गोयल सहित अन्य भक्त मौजूद थे।

पूर्वांचल की आस्था से सराबोर होगी औद्योगिक नगरी

छठ महापर्व की तैयारियां जोरों शुरू

13 नवंबर को नहाय-खाय से चार दिवसीय पर्व का आगाज, काकड़पुरा तालाब और संजय जलाशय पर बनने लगे पूजा के घाट; 40 हजार से अधिक पूर्वांचलवासियों में उत्साह

पीथमपुर। औद्योगिक नगरी पीथमपुर में छठ महापर्व को लेकर तैयारियों का सिलसिला शुरू हो गया है।



रोजगार के लिए पूर्वांचल के विभिन्न क्षेत्रों से आकर बसे हजारों परिवारों के लिए छठ केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि अपनी मिट्टी, संस्कृति और परंपराओं से जुड़ने का अवसर भी है। अनुमान के मुताबिक पीथमपुर में 40 हजार से अधिक पूर्वांचलवासी निवास करते हैं। ऐसे में 13 नवंबर से शुरू होने वाले चार दिवसीय छठ महापर्व को लेकर शहर में विशेष उत्साह देखने को मिल रहा है।

लोक आस्था और सूर्य उपासना का यह महापर्व 13 नवंबर को नहाय-खाय के साथ शुरू होगा। पर्व में अभी कुछ दिन शेष हैं, लेकिन श्रद्धालुओं ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। काकड़पुरा तालाब और संजय जलाशय पर पूजा के लिए घाट तैयार किए जा रहे हैं। श्रद्धालु और स्वयंसेवक जलाशयों के किनारे सफाई, समतलीकरण और पूजा स्थलों की व्यवस्था में जुटे हैं। आने वाले दिनों में इन स्थानों पर छठ पूजा की रौनक दिखाई देने लगेगी।

चार दिनों तक चलेगी सूर्यदेव की आराधना

छठ महापर्व चार दिनों तक अलग-अलग धार्मिक परंपराओं के साथ मनाया जाता है। पहले दिन नहाय-खाय में व्रती स्नान कर शुद्धता के साथ पर्व की शुरुआत करते हैं। दूसरे दिन खरना होता है, जिसमें दिनभर उपवास के बाद शाम को प्रसाद ग्रहण किया जाता है। इसके बाद व्रती निर्जला उपवास रखते हैं। तीसरे दिन 15 नवंबर को अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य अर्पित किया जाएगा। वहीं 16 नवंबर की सुबह उगते सूर्य को अर्घ्य देने के साथ महापर्व का समापन होगा।

घाटों पर उमड़ेगी श्रद्धालुओं की भीड़

छठ पूजा में नदी, तालाब और अन्य जलाशयों के किनारे सूर्यदेव को अर्घ्य देने की परंपरा है। शाम के समय डूबते सूर्य और अगली सुबह उगते सूर्य को अर्घ्य देने के लिए व्रती पानी में खड़े होकर पूजा-अर्चना करते हैं। इस दौरान परिवार के सदस्य भी घाटों पर मौजूद रहते हैं। पूजा में बांस की टोकरी, सूप, फल, ठेकुआ और पारंपरिक प्रसाद का विशेष महत्व होता है।

औद्योगिक नगरी में दिखेगा पूर्वांचल की संस्कृति का रंग

पीथमपुर में देश के अलग-अलग हिस्सों से आए लोग निवास करते हैं। इनमें पूर्वांचल के परिवारों की बड़ी संख्या है, जो रोजगार और व्यवसाय के साथ अपनी धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं को भी पूरी श्रद्धा से निभाते हैं। छठ महापर्व के अवसर पर परिवारों का एक साथ जुटना, पारंपरिक गीतों की गूंज और घाटों पर सामूहिक पूजा का दृश्य शहर को अलग सांस्कृतिक पहचान देता है।

नगर पालिका से घाटों पर व्यवस्थाओं की अपेक्षा

छठ महापर्व के दौरान काकड़पुरा तालाब और संजय जलाशय पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना है। ऐसे में जलाशयों की साफ-सफाई, घाटों का समतलीकरण, पर्याप्त रोशनी, स्वच्छता, सुरक्षा और आवागमन की व्यवस्था समय रहते करना जरूरी होगा। श्रद्धालुओं की अपेक्षा है कि नगर पालिका और संबंधित विभाग तैयारियों में सहयोग करें, ताकि व्रतधारियों और उनके परिवारों को पूजा के दौरान किसी प्रकार की असुविधा न हो।

रोजगार की तलाश में अपनी जन्मभूमि से दूर बसे पूर्वांचल के परिवारों के लिए छठ महापर्व अपनी परंपराओं को जीवित रखने और नई पीढ़ी को संस्कृति से जोड़ने का अवसर है। अब घाटों पर शुरू हुई तैयारियां इस बात का संकेत दे रही हैं कि कुछ ही दिनों में पीथमपुर सूर्य उपासना और लोक आस्था के रंग में रंगा नजर आएगा।

गौ पूजन के साथ गोवर्धन पूजा संपन्न

देवास,पवनयादव । गोकुलधाम गौशाला में गोवर्धन पूजा के अवसर पर गौ पूजन एवं गोवर्धन पूजन का आयोजन सरपंच कपिल राठौर और गौ सेवक जीतू रघुवंशी के नेतृत्व में किया गया। इस अवसर पर गौमाता के संरक्षण, संवर्धन और सम्मान का संकल्प लिया गया। साथ ही गौ सम्मान आह्वान अभियान के तीसरे चरण के तहत आगामी 4 दिसंबर को भोपाल के जंबूरी मैदान में आयोजित होने वाले कार्यक्रम में सहभागिता का आह्वान किया गया। आयोजन के दौरान उपस्थित गौसेवकों ने गौमाता को राष्ट्रमाता का दर्जा दिलाने की मांग को लेकर एकजुट होकर अभियान में भागीदारी निभाने का संकल्प लिया। जीतू रघुवंशी ने कहा कि भारतीय संस्कृति और परंपरा में गौमाता का विशेष स्थान है। गौवंश का संरक्षण और संवर्धन समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। इसके लिए जनजागरण और व्यापक सहभागिता आवश्यक है। इस अवसर पर गौमाता का पूजन कर सुख-समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की गई।

गौ पूजन कर खिलाया मिष्ठान



इन्दौर। श्री मारुति पंचमुखी हनुमान मंदिर नाव घाट, बडवाह पर महंत मंगलदास महाराज खाकी के सानिध्य में गोर्वधन उत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया। श्री गंगा गौशाला में गौ माता का पूजन कर उनको गुड़, हलवा, पूड़ी और मिष्ठान खिलाया गया। सभी गौ माता को मोर पंख और घुघरू बांधकर सजाया गया। गोवर्धन पर्वत बनाकर उसकी परिक्रमा की गई। इस मौके पर गौ भक्त बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

श्री श्रीविद्याधाम पर गौशाला में मना गोवर्धन पूजा महोत्सव



इंदौर। विमानतल मार्ग स्थित श्री श्रीविद्याधाम पर ब्रह्मलीन स्वामी गिरिजानंद सरस्वती की परंपरा के अनुसार महामंडलेश्वर स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती के सानिध्य में धोक पड़वा के उपलक्ष्य में सौभाग्यवती महिलाओं का पूजन कर उन्हें नवीन वस्त्र भेंट किए गए।

आश्रम परिवार के सुरेश शाहरा, पं. दिनेश शर्मा, सुश्री उमा शुक्ला एवं राजेंद्र महाजन ने बताया कि आचार्य पं. राजेश शर्मा के निर्देशन में 11 विद्वान पंडितों ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पूजन विधि संपन्न कराई। इसके पूर्व सुबह आश्रम की गौशाला में गोवर्धन पूजा का उत्सव भी धूमधाम से मनाया गया। महिलाओं ने गाय के गोबर से गोवर्धन पर्वत की प्रतिकृति बनाकर हरे चारे और फूलों से श्रृंगार कर भगवान गिरिराज का पूजन किया। गौशाला स्थित 300 से अधिक गौवंश को श्रृंगारित कर उन्हें व्यंजन भी परोसे गए। सैकड़ों श्रद्धालुओं ने अपने परिवार सहित गौशाला आकर परिक्रमा लगाई तथा गोवर्धन पर्वत के साथ गौवंश के पूजन में भी भागीदारी दर्ज कराई।

संकट के दौर में भी वैचारिक निष्ठा की मिसाल बने कांग्रेस नेता दीपू यादव



इंदौर। राजनीति को अक्सर संभावनाओं का खेल और अवसरवादिता का पर्याय कहा जाता है, जहाँ हवा का रुख देखकर नेता अक्सर अपने दल बदल लेते हैं। विशेषकर जब दौर कठिन हो और पार्टी सत्ता से बाहर हो, तब नेताओं का पलायन आम बात बन जाती है। ऐसे समय में कुछ ही ऐसे व्यक्तित्व होते हैं जो आँधी और दबाव के आगे झुकने के बजाय चट्टान की तरह अपनी जगह पर टिके रहते हैं। इंदौर विधानसभा क्रमांक-1 के कद्दावर कांग्रेस नेता दीपू यादव ऐसे ही गिने-चुने और कर्मठ सिपाहियों में से एक हैं, जिन्होंने कठिन समय में भी अपनी निष्ठा नहीं बदली।

दबाव और प्रलोभन के आगे नहीं झुके

वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में जब आए दिन दल-बदल की खबरें सुर्खियां बनती हैं और कई लोग सत्ता के मोह या प्रशासनिक दबाव के चलते कांग्रेस पार्टी छोड़कर भाजपा का दामन थाम रहे थे, तब दीपू यादव ने विपरीत परिस्थितियों का डटकर मुकाबला किया। उन्होंने हर उस लालच और दबाव को ठुकरा दिया जो उनकी वैचारिक स्वतंत्रता को खरीद सकता था। उनका यह अडिग रुख इस बात का जीता-जागता प्रमाण है कि वे किसी पद या व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि कांग्रेस पार्टी की विचारधारा और जनसेवा के संकल्प के साथ जुड़े हैं।

दीपू यादव केवल कागजी नेता नहीं हैं, बल्कि वे जमीन पर उतरकर जनता की लड़ाई लड़ने वाले सिपाही हैं। इंदौर-1 विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले वार्ड क्रमांक 10 व आसपास के क्षेत्रों में उनकी सक्रियता और जन-सरोकार के कार्य किसी से छिपे नहीं हैं। चाहे स्थानीय स्तर पर जनता की बुनियादी समस्याओं (जैसे पानी, सड़क और राशन संबंधी दिक्कतें) के समाधान की बात हो, या फिर पार्टी के हर मुश्किल दौर में आगे रहकर नेतृत्व करने की—उन्होंने हमेशा साबित किया है कि वे जनता और कार्यकर्ताओं के सुख-दुख में चट्टान की तरह साथ खड़े हैं। उनकी धर्मपत्नी विनीतिका दीपू यादव के माध्यम से क्षेत्र में हुए जन-कार्य और पारिवारिक संस्कारों की विरासत को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने हमेशा जनता के बीच अपनी मजबूत पैठ बनाए रखी है।

मंत्री सिलावट के निवास पर मनाया गया दीपावली मिलन समारोह



सांवेर (राहुल प्रजापत)। मध्य प्रदेश शासन के जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट के निज निवास पर मंगलवार को दीपावली मिलन समारोह का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर उनके निवास पर बधाई देने वाले इष्ट मित्रों और कार्यकर्ताओं का तांता लगा रहा। समारोह में हजारों की संख्या में पहुंचे कार्यकर्ताओं ने मंत्री सिलावट का पुष्प मालाओं से आत्मीय स्वागत किया। दीपावली मिलन समारोह के दौरान समर्थकों और क्षेत्र की जनता में भारी उत्साह देखा गया। दीपावली मिलन समारोह में सांसद शंकर लालवानी, विधायक मधु वर्मा, पूर्व विधायक सुदर्शन गुप्ता, विशाल पटेल, जिला उपाध्यक्ष भारतसिंह चौहान, दिलीप चौधरी, महामंत्री अंतर दयाल, नगर परिषद अध्यक्ष संदीप चंगेडिया, पार्षद योगेश गेंदर, मनोज मिश्रा, सुरेश कुलवाडे, मंडल अध्यक्ष रवि बावपेई, विपिन जागीरदार, शिवपालसिंह चावडा, वीनु चौधरी, सुरेश सिंह, सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि, वरिष्ठ नेता, सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी और बडी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। पूरे आयोजन के दौरान निवास पर उत्सव जैसा माहौल बना रहा।





जरूरतमंद परिवारों के साथ मनाई दीपावली

देवास,पवनयादव । निशा चामुंडेश्वरी मां फाउंडेशन की डायरेक्टर निशा यादव के नेतृत्व में जुग्गी बस्ती में दीपावली उत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रमके मुख्य अतिथि सांसद महेंद्र सिंह सोलंकी, विशेष अतिथि मनीष जैन थे। संस्था की ओर से 40 बस्तियों की जरूरतमंद महिलाओं को साड़ियां वितरित की गईं। बच्चियों को सूट तथा बच्चों को नए कपड़े दिए। दीपावली की खुशियां बांटने के उद्देश्य से बच्चों को फुलझड़ियां, अनार, चकरी और बाती वितरित की गई। साथ ही बच्चों के बीच बैठकर चॉकलेट और मिठाइयां बांटी। संस्था के सेकंड डायरेक्टर सुनील प्रजापति ने बताया कि फाउंडेशन द्वारा पिछले 10 वर्षों से लगातार इस प्रकार के आयोजन किए जा रहे हैं। संस्था का उद्देश्य समाज के उन लोगों तक खुशियां पहुंचाना है, जिनकी खुशियों को अक्सर कोई देखने नहीं पहुंचता। कार्यक्रम में संस्था